



2026:AHC:35250-DB

इलाहाबाद उच्च न्यायालय

आपराधिक अपील संख्या - 460/1988

विनय कुमार दूबे

..... अपीलकर्ता (गण)

बनाम

राज्य

..... प्रतिवादी (गण)

अपीलकर्ता (गण) की ओर से अधिवक्ता : प्रियांशी गुप्ता (ए.सी.), ए.सी. चतुर्वेदी, सुनील कुमार श्रीवास्तव

प्रतिवादी (गण) की ओर से अधिवक्ता : ए.जी.ए.

एवं एक अन्य संबंधित वाद

न्यायालय संख्या - 46

माननीय न्यायमूर्ति सिद्धार्थ

माननीय न्यायमूर्ति जय कृष्ण उपाध्याय

1. आपराधिक अपील संख्या 460/1988 में अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता श्री पंकज श्रीवास्तव और आपराधिक अपील संख्या 462/1988 में अपीलकर्ता की ओर से पेश होने वाले विद्वान न्यायमित्र सुश्री प्रियांशी गुप्ता और राज्य की ओर से विद्वान ए.जी.ए. श्री प्रेम शंकर प्रसाद को सुना एवं रिकॉर्ड के साथ विचारण न्यायालय द्वारा पारित निर्णय एवं आदेश का भी अवलोकन किया।

2. लिखित प्रथम सूचना रिपोर्ट प्रदर्श क-2 के अनुसार अभियोजन पक्ष की कहानी यह है कि 24.12.1981 को शिकायतकर्ता, रवींद्र सिंह, अपने भाई, धीरेंद्र सिंह (प्रकरण के मृतक) के साथ सुंडी मेमोरियल टूर्नामेंट देखने के लिए क्रिश्चियन इंटर कॉलेज के मैदान में गए थे। वे मैदान की पश्चिमी दीवार पर बैठकर मैच देख रहे थे। सतीश पाल सिंह, सदन मिश्रा और पीयूष कुमार भी मैदान में उनके पास एक ही दीवार पर बैठे थे, सुबह करीब 11:30 बजे वहां कई लोग जमा हो गए, जिनमें हॉकी से लैस विनय कुमार दुबे, उनके भाई दीपक कुमार देसी पिस्तौल से लैस डॉ.

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



अगम प्रकाश दुबे और सुरेश के बेटे थे, विनय वर्मा के साथ हॉकी स्टिक से लैस दो अन्य अज्ञात लोग वहां आए और उन पर झपट पड़े। दीपक कुमार ने धीरेंद्र पर गोली चला दी, जिससे वह घायल हो गया। नतीजतन धीरेंद्र जमीन पर गिर गए। अपराध करने का आशय अभिकथित है कि धीरेंद्र और दीपक लंबे समय से एक-दूसरे के विरोधी थे और दिनांक 23.12.1981 को शाम लगभग 04:30 बजे देवी रोड पर डॉ. पुरोंग के अस्पताल के सामने, दीपक कुमार और धीरेंद्र के बीच कुछ गरमागरम बातचीत हुई, पीयूष कुमार, सतीश, रवींद्र और दीपक कुमार ने "भविष्य में उन्हें देखने की धमकी दी। धीरेंद्र को गोली लगने के बाद सभी आरोपी स्टेशन रोड की ओर भागने लगे और शिकायतकर्ता और अन्य गवाहों ने शोर मचाते हुए उनका पीछा किया। वहीं, इयूटी पर तैनात कॉन्स्टेबल हरनारायण सिंह, प्रहलाद सिंह और शायन मोहम्मद खान ने भी उस समय उनका पीछा किया और करीब एक फर्लांग की दूरी के बाद आरोपी विनय कुमार दुबे को उसकी हॉकी स्टिक समेत गिरफ्तार कर लिया। घटना स्थल पर एक पुलिस जीप भी पहुंची जिसके द्वारा धीरेंद्र को जिला अस्पताल, मैनपुरी ले जाया गया और पी.डब्ल्यू.-1, रवींद्र सिंह आरोपी विजय कुमार दुबे के साथ पुलिस स्टेशन गए जहां उन्होंने एफआईआर, प्रदर्श क-1 दिया, जिसके आधार पर एचएम सुरेश पाल सिंह ने चिक रिपोर्ट अंकित किया, प्रदर्श क-4, और दोपहर 12:30 बजे प्रदर्श क-5 के माध्यम से जी.डी. में प्रकरण भी दर्ज किया। आरोपी विजय कुमार दुबे के कब्जे से बरामद हॉकी स्टिक को भी हेड मोहरीर ने हिरासत में ले लिया, जिसने मेमो, प्रदर्श क-1 तैयार किया। भा0द0सं0 की धारा 147, 148, 149, 307 और 323 के तहत प्रकरण दर्ज किया गया था। हालांकि, धीरेंद्र की मृत्यु अस्पताल में हुई, जिसकी सूचना अस्पताल के अधिकारियों द्वारा एसएचओ, कोतवाली को दी गई थी, जहां दोपहर 12:25 बजे प्रकरण को भा0द0सं0 की धारा 302 के तहत प्रदर्श क-6 के तहत बदल दिया गया था। प्रकरण की विवेचना एस.आई., महेंद्रपाल सिंह को सौंपी गई थी और एस.आई., आर.के. गुप्ता को मृतक की पंचायतनामा करने के लिए आवश्यक कागजात सौंपे गए थे। वह वहां गया और पंचों को नियुक्त करने के बाद पंचायतनामा, प्रदर्श क-9 तैयार किया, और शव को सील करने के बाद उसे सीएमओ को पत्र, आर.आई., चालन नैश को पत्र, फोटो नैश और मुहर का नमूना, प्रदर्श क-10 से क-14 को पोस्टमार्टम कराने के लिए कांस्टेबल वीरपाल सिंह और प्रेम शंकर को सौंप दिया। क्रमानुसार। मृतक धीरेंद्र के शव का पोस्टमॉर्टम डॉ. ए.के. उपाध्याय द्वारा किया गया, जिन्होंने मृतक के शरीर पर एक गोली का घाव पाया और पोस्टमार्टम रिपोर्ट, प्रदर्श क-3 तैयार की। उनकी राय में, मृत्यु पूर्व-मॉर्टम चोटों के परिणामस्वरूप सदमे और रक्तस्राव के कारण हुई थी। सतीश पाल सिंह और रवींद्र पाल सिंह की भी उसी दिन डॉ. एससी वर्मा द्वारा



चिकित्सकीय जांच की गई, जिन्होंने जांच रिपोर्ट, क्रमशः प्रदर्श क-7 और क-8 में उनकी चोटों का उल्लेख किया।

3. प्रकरण की विवेचना एस.आई., महेंद्र पाल सिंह, चक्र लाल शर्मा द्वारा पूरी की गई, जिन्होंने केस डायरी में आवश्यक कागजात लिखे, गवाहों के बयान दर्ज किए, मौके का निरीक्षण किया और नक्शा-नजरी, प्रदर्श क16 तैयार किया। अभियुक्तों के खिलाफ लगाए गए आरोपों को साबित करने के लिए, अभियोजन पक्ष ने रवींद्र पाल सिंह, पी.डब्ल्यू. 1; सतीश, पाल सिंह, पी.डब्ल्यू. 2, तथ्य के गवाह और अन्य गवाहों सहित; डॉ. ए.के. उपाध्याय, पी.डब्ल्यू. 3; एचएम सुरेश पाल सिंह, पी.डब्ल्यू. 4; डॉ. एस.सी. वर्मा, पी.डब्ल्यू. 5; एस.आई. राजन लाल शर्मा, पी.डब्ल्यू. 7; एस.आई. आर.के. गुप्ता, पी.डब्ल्यू. 6; एस.आई. सुरेंद्र प्रताप सिंह, पी.डब्ल्यू. 7, सी/एस वीरपाल सिंह, पी.डब्ल्यू. 9. न्यायालय ने डॉ. डी.पी. भटनागर, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, मैनपुरी की भी सीडब्ल्यू 1 के रूप में परीक्षित किया गया है, जबकि अगम प्रकाश दुबे सीडब्ल्यू 2 ने ऊपर उल्लेख किए गए प्रदर्शों को साबित किया है।

4. आरोपियों से द0प्र0सं0 की धारा 313 के तहत पूछताछ की गई। आरोपी सुरेश ने प्रस्तुत किया है कि सतीश पाल सिंह, सदानंद और अन्य व्यक्ति मैच देख रहे थे और धारा 307 भा0द0सं0 के तहत एक प्रकरण में गवाह होने के नाते, उसे सतीश पाल सिंह, पीयूष और सदानंद ने क्रिश्चियन कॉलेज के मैदान में हॉकी स्टिक और डंडे से पीटा था और यह घटना रात 11 बजे से 12 बजे के बीच हुई थी और उसने रात 12 या 12:30 बजे उसकी चिकित्सा जांच कराई। आरोपी विनय कुमार दुबे ने कहा है कि उसने कोई अपराध नहीं किया है और सह-आरोपी दीपक की पीयूष के साथ दुश्मनी के कारण उसे प्रकरण में झूठा फंसाया गया है। अपनी गिरफ्तारी के बारे में, उन्होंने कहा कि उन्हें दोपहर 2:30 या 3 बजे उनके घर से ले जाया गया था। उन्होंने आगे कहा कि पीयूष और दीपक के बीच आगरा में झगड़ा हुआ था और इस वजह से पीयूष उसके प्रति शत्रुतापूर्ण था और दीपक का भाई होने के नाते उसे इस प्रकरण में झूठा फंसाया गया है और गवाह उसके खिलाफ झूठी गवाही दे रहे हैं। अपने बचाव में, अभियुक्तों ने डॉ. एस. थरियानी, डीडब्ल्यू-1 और रमेश चंद्र, डीडब्ल्यू-2 से पूछताछ की है।

5. पी.डब्ल्यू.1, रवींद्र सिंह ने अपनी मुख्य परीक्षा में शपथ पर कहा है कि वह अभियुक्त, विनय कुमार दुबे और सुरेश को जानता है। उन्होंने आगे कहा कि वे पांच भाई थे, लेकिन धीरेंद्र की हत्या कर दी गई है। उन्होंने आगे बताया कि सुबह करीब 10.30 बजे वह अपने भाई धीरेंद्र के साथ



मैनपुरी के क्रिश्चियन इंटर कॉलेज के मैदान में क्रिकेट मैच देख रहे थे। टूर्नामेंट का आयोजन सुंडी मेमोरियल सोसाइटी द्वारा किया जा रहा था। उन्होंने आगे कहा कि उनके साथ सतीश पाल सिंह, पीयूष कुमार और साहा आनंद मिश्रा भी टूर्नामेंट देख रहे थे। वहां बड़ी भीड़ जमा हो गई थी। वे उत्तर से दक्षिण की ओर फैली मैदान की बाउंड्री की पश्चिमी दीवार पर बैठकर मैच देख रहे थे। उसी समय विनय कुमार दुबे, दीपक दुबे, सुरेश, विनय वर्मा और दो अज्ञात व्यक्ति वहां आए। इनमें से दीपक के पास देसी पिस्तौल थी और बाकी हॉकी स्टिक से लैस थे। वे आए और उन पर 'मारपीट' करने के लिए झपटते रहे जब तक कि उन्होंने सतर्क होने की कोशिश नहीं की। ये आरोपी उनकी पिटाई कर रहे थे और वे खुद को बचाने की कोशिश कर रहे थे। पहले उन्होंने धीरेंद्र को हॉकी स्टिक से पीटा और बाद में दीपक ने उस पर देशी पिस्तौल से गोली चला दी और उसे घायल कर दिया। अपने बचाव में आरोपियों ने सुरेश को चोटें पहुंचाईं, जो सतीशपाल सिंह को लगी थीं। जब उसके भाई को गोली लगी तो आरोपी स्टेशन रोड की ओर भागने लगे, लेकिन उन्होंने और वहां मौजूद तीन सिपाहियों ने उनका पीछा किया और हॉकी स्टिक के साथ विनय कुमार दुबे को गिरफ्तार करने में सफल रहे। उसी समय एक जीप उस रास्ते से गुजरी, जिसे रोक दिया गया और उसके भाई धीरेंद्र को अस्पताल ले जाया गया। वह आरोपी विनय कुमार दुबे और कुछ अन्य व्यक्तियों के साथ थाने गए, जहां उन्होंने प्रथम सूचना रिपोर्ट, प्रदर्शक 2 को सौंप दिया और हॉकी स्टिक और आरोपी को पुलिस को भी सौंप दिया। हेड मोहरिर ने हॉकी स्टिक, प्रदर्शक 1 के लिए मेमो तैयार किया, जिसे उन्होंने देखा। मकसद के बारे में उन्होंने कहा है कि घटना से एक दिन पहले मैनपुरी शहर में डॉ. पुरोंग के अस्पताल के सामने देवी रोड पर उनके और उनके भाई धीरेंद्र, सतीश और पीयूष के बीच विनय कुमार दुबे, दीपक दुबे और सुरेश के बीच कुछ गरमागरम बातचीत हुई थी।

6. पी.डब्ल्यू.-2 सतीशपाल सिंह है, जिसने शपथ पर कहा कि वह न्यायालय में मौजूद आरोपी को जानता है और मृतक धीरेंद्र सिंह को भी जानता है। घटना से एक दिन पहले शाम को मृतक धीरेंद्र, पीयूष और रवींद्र ने दीपक दुबे, विनय, दुबे और सुरेश के साथ गरमागरम बातचीत की और दीपक दुबे ने धीरेंद्र को भविष्य में मिलने की धमकी दी। उन्होंने आगे कहा कि 24.12.1981 को लगभग 11 बजे जब वे खेल के मैदान की पश्चिमी दीवार पर बैठकर ईसाई मैदान में खेले गए मैच को देख रहे थे, तो रवींद्र, धीरेंद्र, पीयूष और सता नंद भी मैच देख रहे थे। मैच की व्यवस्था सुंडी मेमोरियल टूर्नामेंट कमेटी द्वारा की गई थी। जब वे मैच देख रहे थे, तो दीपक देशी पिस्तौल से लैस थे और विनय दुबे, सुरेश, विनय वर्मा और हॉकी से लैस दो अन्य वहां आए और उनके



साथ 'मारपीट' करने लगे। उन्हें और रवींद्र को हॉकी की चोटें आई हैं। उन्होंने सुरेश की हॉकी छीन ली और अपने बचाव में उनके साथ 'मारपीट' कर दिया। सुरेश ने उन्हें ईंट के बल्ले से चोटें पहुंचाईं। बाद में सुरेश ने उनसे हॉकी छीन ली। दीपक दुबे ने धीरेंद्र पर गोली चला दी, जिससे उनके सीने के दाहिनी ओर गोली लग गई। वह नीचे गिर गया। उसी समय आरोपी स्टेशन रोड की ओर भागने लगे। उन्होंने उनका पीछा किया और झूटी पर तैनात तीन कांस्टेबलों ने कुछ दूरी के बाद आरोपी विनय कुमार दुबे को हॉकी के साथ गिरफ्तार कर लिया। उस समय तक एक पुलिस जीप गुजरी, जिसमें धीरेंद्र को अस्पताल ले जाया गया और रवींद्र पाल सिंह और पीयूष विनय कुमार दुबे को पुलिस स्टेशन ले गए, जहां रवींद्र पाल सिंह ने एफआईआर दर्ज कराया। उन्होंने यह भी कहा कि अस्पताल में उनकी चिकित्सकीय जांच की गई थी।

7. पी.डब्ल्यू. 3, डॉ. ए.के. उपाध्याय ने शपथ पर कहा कि 24.12.1981 को उन्हें जिला टीबी अस्पताल, मैनपुरी में तैनात किया गया था। उस तारीख को, लगभग 4:15 बजे उन्होंने मृतक धीरेंद्र के शव का पोस्टमॉर्टम किया, जिसे कांस्टेबल, वीरपाल सिंह और प्रेम शंकर सीलबंद हालत में लाए गए थे। मृतक की संभावित उम्र लगभग 18 वर्ष थी, जिसकी उसी दिन 12:05 बजे अस्पताल में मृत्यु हो गई। उसकी जांच करने पर, उसने अपने व्यक्ति पर निम्नलिखित चोटें पाईं:-

(i) बाएं सहायक के शीर्ष से 12 सेमी नीचे मध्य-रेखा में 2 सेमी x 1 सेमी x गुहा गहरी, बाईं ओर की छाती के प्रवेश का फायर आर्म घाव। मार्जिन उल्टा और क्षत-विक्षत। घाव के चारों ओर काला पड़ना और टैटू गुदवाना। दिशा बाएं से दाएं तिरछी पीछे। टी-8वें के स्तर पर बाएं फासिक कशेरुक मांसलता से एक शंक्वाकार धातु की गोली बरामद की गई।

8. आंतरिक जांच में, उन्होंने पाया कि प्लूरा फट गया था। बायां फेफड़ा भी फट गया था और वक्ष गुहा में रक्त मौजूद था। उन्होंने कहा कि मृतक की मौत बंदूक की गोली लगने से हुए सदमे और रक्तस्राव के परिणामस्वरूप हुई। उन्होंने आगे कहा कि उन्हें चोट में एक धातु की गोली मिली और उसे सील करने के बाद उन्होंने इसे एसएसपी, मैनपुरी को भेज दिया। उन्होंने शर्ट, स्वेटर और अंडरवियर, प्लास्टिक के जूते की एक जोड़ी और खून से सनी एक पट्टी को भी सील कर दिया।

9. पी.डब्ल्यू.4, एच.एम. सुरेश पाल सिंह ने कहा कि 24.12.1981 को, जब वह एफ.आई.आर., प्रदर्श क-2 के आधार पर पुलिस स्टेशन- कोतवाली में तैनात थे, तो उन्होंने चिक रिपोर्ट, प्रदर्श



क.-4 को नोट किया और दोपहर 12.10 बजे प्रदर्श क.-5 के माध्यम से प्रकरण दर्ज किया। उन्होंने आगे प्रस्तुत किया कि उसी दिन, उन्हें धीरेंद्र की मृत्यु के बारे में जानकारी मिली और उन्होंने धारा 302 भा0द0सं0 के तहत प्रकरण को प्रदर्श क 6 के माध्यम से बदल दिया। उन्होंने यह भी कहा कि उन्होंने एक हॉकी अपने कब्जे में ले ली और मेमो तैयार किया, प्रदर्श क1।

10. पी.डब्ल्यू.-5, डॉ. एस.सी. वर्मा ने शपथ पर कहा कि 24.12.1981 को जब वह जिला अस्पताल, मैनपुरी में रेडियोलॉजिस्ट के रूप में तैनात थे, तो उन्होंने दोपहर 01:35 बजे आदर्शपाल सिंह के बेटे सतीशपाल सिंह की चिकित्सकीय जांच की और उनके व्यक्ति पर निम्नलिखित चोटें पाई गईं: -

(i) दाहिने कान से लगभग 10 सेमी की दूरी पर खोपड़ी की मध्य रेखा के पीछे दर्दनाक सूजन 2 सेमी x 1 सेमी।

(ii) दाहिने पैर के पौधे के पहलू में 1.5 सेमी x 0.2 सेमी x त्वचा गहरी घाव होता है।

(iii) दाएं बाएं के हिस्से में 11 सेमी का रैखिक घर्षण।

(iv) बाएं पैर के मेडिकल मैलेडर के ठीक नीचे 3 सेमी x 1.5 सेमी के क्षेत्र में कंपोज्ड घर्षण। रंग लाल।

उनकी राय में, ये चोटें सरल थीं और किसी कुंद वस्तु के कारण हुई होंगी। उन्होंने चोट की रिपोर्ट प्रदर्श क 7 को भी साबित किया।

11. उसी दिन उन्होंने दोपहर 1:40 बजे रवींद्र पाल सिंह की भी जांच की और उनके व्यक्तियों पर निम्नलिखित चोटें पाई गईं: -

(i) पीठ के बाईं ओर के निचले हिस्से में दर्द लेकिन चोट का कोई निशान नहीं देखा गया।

उन्होंने चोट की रिपोर्ट प्रदर्श क 8 को भी साबित किया। उन्होंने कहा कि सभी चोटें हॉकी स्टिक और ईट-बैट के कारण लगी होंगी और उसी दिन सुबह 11:30 बजे लगी होंगी।

12. पी.डब्ल्यू.-6, एस.आई., आर.के. गुप्ता ने शपथ पर कहा कि 24.12.1981 को जब वह दोपहर 12:35 बजे जी.डी. एक्स. के.6 के आधार पर एस.आई., पी.एस.-कोतवाली के रूप में तैनात थे, तो वह मृतक धीरेंद्र के शव की जांच रिपोर्ट तैयार करने के लिए जिला अस्पताल, मैनपुरी गए। दोपहर 12:50 बजे वह वहां पहुंचे और पंचों की नियुक्ति के बाद जांच रिपोर्ट तैयार की। प्रदर्श क



9. उन्होंने सीएमओ को पत्र, आरआई को पत्र, चालन नैश, फोटो नैश और मुहर का नमूना भी तैयार किया। प्रदर्श क 10 से क-14 क्रमशः। उन्होंने आगे कहा कि शव को सील करने के बाद उन्होंने पोस्टमार्टम कराने के लिए कांस्टेबल, प्रेम शंकर और वीरबल को सौंप दिया और उन्हें भी सौंप दिया, प्रदर्श क-10 को क-15।

13. पी.डब्ल्यू.-7, एस.आई., राजन लाल शर्मा ने शपथ पर कहा कि 01.09.1982 को जांच पूरी करने के बाद, उन्होंने अभियुक्त, विनय कुमार दुबे, दीपक दुबे, सुरेश और विनय वर्मा के खिलाफ आरोप पत्र प्रस्तुत किया। 15.

14. पी.डब्ल्यू.-8, एस.आई., सुरेंद्र प्रताप सिंह ने शपथ पर कहा कि 24.12.1981 को जब वह उप-निरीक्षक, पुलिस स्टेशन-कोतवाली के रूप में तैनात थे, तो उन्हें इस प्रकरण की जांच का काम सौंपा गया था। उन्होंने सतीश पाल सिंह और एचएम सुरेश पाल सिंह के बयान दर्ज किए। इसके बाद, वह जिला अस्पताल, मैनपुरी गए और एसआई आरके गुप्ता को धीरेंद्र के शव पर जांच रिपोर्ट तैयार करते हुए पाया। बाद में उन्होंने सतीश पाल सिंह, रवींद्रपाल सिंह का बयान दर्ज किया, उन्होंने घटना स्थल का निरीक्षण भी किया और नक्शा-नजरी प्रदर्श क 6 तैयार किया। उन्होंने कांस्टेबल सायन खान, प्रहलाद सिंह और नारायण सिंह के बयान भी दर्ज किए। पोस्टमार्टम रिपोर्ट मिलने के बाद उसने केस डायरी में इसे नोट कर लिया। 29.01.1981 को उन्होंने सी/डॉ. राजपाल सिंह का बयान दर्ज किया और उसके बाद पुलिस स्टेशन-कोतवाली के प्रभारी निरीक्षक द्वारा जांच की गई।

15. पी.डब्ल्यू.-9, सी/एस वीरबल सिंह ने शपथ पर कहा कि 24.12.1981 को, जब वह गणेश बुर्ज के आउट-पोस्ट में तैनात थे, और मृतक धीरेंद्र का शव आवश्यक कागजात के साथ पोस्टमार्टम कराने के लिए उन्हें सौंप दिया गया था। वह शव को मुर्दाघर ले गया और अधिकारियों को आवश्यक कागजात दिए, और जब तक शव उसके कब्जे में रहा, तब तक किसी को भी इसमें हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं दी गई।

16. सी.डब्ल्यू.-1, डॉ. डी.पी. भटनागर, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, मैनपुरी और सी.डब्ल्यू.-2, अगम प्रकाश दुबे, जिनके बयान अभियुक्तों के खिलाफ प्रकरण के लिए प्रासंगिक नहीं हैं क्योंकि वे केवल आरोपी दीपक की उम्र साबित करने के लिए पेश किए गए थे।



17. डी.डब्ल्यू.-1, डॉ. एस. थरयानी, गवाह ने आरोपी सुरेश चंद्र की चोट रिपोर्ट को साबित कर दिया है। उन्होंने शपथ पर कहा कि 24/25.12.1981 को लगभग 12:30 बजे उन्होंने आरोपी सुरेश की जांच की और उनके व्यक्ति पर निम्नलिखित चोटें पाई -

- (i) फटा घाव 2 सेमी x $\frac{3}{4}$ सेमी x बाएं माथे पर चारों ओर सूजन में गहरी 1 - $\frac{1}{2}$ सेमी पार्श्व से बाईं आंख भौं के बाहरी छोर तक बंद हो जाती है। चोट को निगरानी रखा गया। एक्स-रे की सलाह दी।
- (ii) खोपड़ी के ऊपर और पीछे 24 सेमी ऊपर तक 2 सेमी x $\frac{1}{2}$ सेमी x खोपड़ी का घाव गहरा होता है।
- (iii) घर्षण वाले संलयन लाल 3 सेमी x $1\frac{1}{2}$ सेमी बाईं ओर गहरे 8 सेमी बाएं कान से 20 सेमी ऊपर बाएं आंख भौंह तक।
- (iv) घर्षण $\frac{1}{2}$ सेमी x $\frac{1}{2}$ सेमी बाएं हाथ के अंगूठे का समीपस्थ सिरा प्रारम्भ पर।
- (v) बाएं हाथ पर दाहिनी उंगली के 1 सेमी x $\frac{1}{3}$ सेमी प्रारम्भ की ओर घर्षण।
- (vi) दर्द की शिकायत के साथ दाहिने हाथ का घर्षण 6 सेमी x $\frac{1}{8}$ सेमी प्रारम्भ
- (vii) दाहिनी जांघ के ऊपरी और बाहरी हिस्से पर घर्षण 3 सेमी x 1 सेमी।
- (viii) स्कैपुलर क्षेत्र लाल पर दाईं ओर पीठ पर संलयन 3 सेमी x 1 सेमी।
- (ix) पूरे शरीर में दर्द की शिकायत। कोई अन्य दिखाई देने वाली चोट नहीं देखी गई।

उन्होंने कहा कि चोटें लगभग आधे दिन पुरानी थीं और मेडिकल रिपोर्ट प्रदर्श ख1 भी साबित हुई।

18. डी.डब्ल्यू.-2 रमेश चंद्र ने शपथ पर कहा कि वह ग्राम उदयपुर में स्थित 70-80 बीघा भूमि का मालिक है और जाति से यादव है और अगम प्रकाश दुबे के घर के सामने शहर मैनपुरी का निवासी है। उन्होंने आगे कहा कि वह अपने बेटे विनय कुमार दुबे को जानते हैं, जिसे 24 दिसंबर को उनके घर से 3-4 कांस्टेबलों ने गिरफ्तार किया था।

19. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता ने प्रस्तुत किया है कि यह प्रकरण निजी रक्षा के अधिकार क्षेत्र में आता है; घटना की उत्पत्ति को अभियोजन पक्ष द्वारा छिपाया गया है क्योंकि अपीलकर्ता, सुरेश को लगी चोटों और डीडब्ल्यू-1 द्वारा विधिवत साबित की गई थी, को अभियोजन पक्ष द्वारा समझाया नहीं गया था। इस प्रकरण में भा0द0सं0 की धारा 149 की मदद से अपीलकर्ता की



दोषसिद्धि अनुचित थी, क्योंकि सभी अभियुक्तों का गैरकानूनी रूप से एकत्र होना उचित संदेह से परे विचारण न्यायालय के समक्ष साबित नहीं हुआ था; अभियुक्तों द्वारा किए गए बचाव और द0प्र0सं0 की धारा 313 के तहत उनके बयानों पर विचारण न्यायालय द्वारा विचार नहीं किया गया था। अपीलकर्ता विनय कुमार दुबे को इस प्रकरण में मुख्य आरोपी दीपक दुबे का भाई होने के कारण फंसाया गया है।

20. विद्वान ए.जी.ए. ने अपीलकर्ता के लिए विद्वान अधिवक्ता द्वारा की गई प्रस्तुतियों का विरोध किया है और प्रस्तुत किया है कि निजी बचाव की दलील केवल इस न्यायालय के समक्ष उठाई गई है, जबकि सभी अभियुक्तों ने गैरकानूनी सभा का गठन किया और हत्या की कथित घटना का कारण बना। उन्होंने आगे प्रस्तुत किया है कि अपीलकर्ता, सुरेश को कहीं और चोटें आई हैं, वर्तमान घटना में नहीं। विचारण न्यायालय का निर्णय रिकॉर्ड पर मौजूद सामग्री पर आधारित है और इसकी पुष्टि की जा सकती है।

21. प्रतिद्वंद्वी की दलीलों और रिकॉर्ड पर मौजूद सामग्री को सुनने के बाद, हमें यह आभास हुआ कि यह बचाव पक्ष की ओर से अपीलकर्ता की ओर से किया गया एकतरफा हमला नहीं था, बल्कि दोनों पक्षों ने हिंसा में प्रवेश किया और एक-दूसरे पर हमला किया। अपीलकर्ता, सुरेश को लगी चोट को डीडब्ल्यू-1 द्वारा घटना के समय के संदर्भ में विचारण न्यायालय के समक्ष विधिवत साबित किया गया था। अभियोजन पक्ष के गवाहों ने अपनी गवाही में बचाव पक्ष द्वारा लगी चोटों के बारे में कुछ भी खुलासा नहीं किया, न ही उन्होंने घटना की उत्पत्ति का खुलासा किया, हालांकि उन्होंने घटना के बारे में गवाही दी, वे इसकी वास्तविक उत्पत्ति के बारे में चुप रहे। बचाव पक्ष ने अपनी चोटों और इस तथ्य को साबित कर दिया है कि वे उसी घटना में अपीलकर्ता सुरेश के कारण हुए थे। इसलिए, अभियोजन पक्ष के खिलाफ एक प्रतिकूल निष्कर्ष निकाला जा सकता है क्योंकि कोई स्पष्टीकरण बहुत कम प्रशंसनीय है। अभियोजन पक्ष ने घटना का सही संस्करण रिकॉर्ड पर नहीं लाया है।

22. **राजस्थान राज्य बनाम माधो और अन्य एआईआर 1991 एससी 1065** में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने कहा था कि:

"यदि अभियोजन पक्ष के गवाह वास्तविकता से दूर भागते हैं और प्रतिवादियों को लगी चोटों की व्याख्या नहीं करते हैं, तो यह अभियोजन पक्ष के प्रकरण की उत्पत्ति पर संदेह



पैदा करता है क्योंकि सबूत बताते हैं कि ये चोटें उसी घटना के दौरान लगी थीं। इससे यह आभास होता है कि गवाह घटना के कुछ हिस्से को दबा रहे हैं।

23. **लक्ष्मी सिंह और अन्य बनाम बिहार राज्य (1976) 4 एससीसी 394** में माननीय सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणियों का संदर्भ उपयुक्त होगा जिसमें यह अभिनिर्धारित किया गया है कि:

"12..... हमें ऐसा लगता है कि एक हत्या के प्रकरण में, घटना के समय या विवाद के दौरान अभियुक्त द्वारा लगी चोटों की गैर-व्याख्या एक बहुत ही महत्वपूर्ण परिस्थिति है जिससे न्यायालय निम्नलिखित निष्कर्ष निकाल सकता है:

"(1) कि अभियोजन पक्ष ने घटना की उत्पत्ति और शुरुआत को दबा दिया है और इस प्रकार सही संस्करण प्रस्तुत नहीं किया है:

(2) कि जिन गवाहों ने अभियुक्त के व्यक्ति पर चोटों की उपस्थिति से इनकार किया है, वे सबसे अधिक महत्वपूर्ण बिंदु पर झूठ बोल रहे हैं और इसलिए उनके साक्ष्य अविश्वसनीय हैं:

(3) यदि कोई बचाव पक्ष का संस्करण है जो अभियुक्त के व्यक्ति पर लगी चोटों की व्याख्या करता है, तो इसे संभावित बनाया जाता है ताकि अभियोजन पक्ष के प्रकरण पर संदेह पैदा हो सके।

24. हाल ही में, माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने **नंद लाल और अन्य बनाम छत्तीसगढ़ राज्य (2023) 2 एससीआर 276** में उपरोक्त टिप्पणियों को दोहराते हुए निम्नानुसार व्यवस्था दी थी:

"अभियुक्त के व्यक्ति पर चोटों की व्याख्या करने के लिए अभियोजन पक्ष की ओर से चूक बहुत अधिक महत्व रखती है जहां साक्ष्य में रुचि रखने वाले या शत्रुतापूर्ण गवाह होते हैं या जहां बचाव पक्ष एक ऐसा संस्करण देता है जो अभियोजन पक्ष के साथ असंभवता से प्रतिस्पर्धा करता है, खासकर जब कुछ गवाहों ने यह कहकर झूठ बोला है कि उन्होंने अभियुक्त के व्यक्ति पर कोई चोट नहीं देखी है"

इस प्रकार अभियुक्त के व्यक्तियों पर चोटों का स्पष्टीकरण न देने से यह संदेह पैदा होता है कि क्या अभियोजन पक्ष ने घटना की वास्तविक उत्पत्ति को रिकॉर्ड में लाया है। हालांकि, इस तरह का गैर-स्पष्टीकरण एक ऐसा कारक है जिसे अभियोजन पक्ष के गवाहों की सत्यता का न्याय करने में ध्यान में रखा जाना चाहिए, और न्यायालय को सबूतों की



सावधानी से जांच करनी होगी। प्रत्येक प्रकरण अपनी विशेषताएं प्रस्तुत करता है। कुछ प्रकरण में, अभियोजन पक्ष की अपनी कहानी की चोटों को ध्यान में रखने में विफलता, जबकि अन्य में अभियोजन पक्ष के प्रकरण पर इसका बहुत कम या कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ सकता है। यह किसी दिए गए प्रकरण में, सार्वभौमिक अनुप्रयोग के कानून के निजी प्रस्ताव की दलील को भी मजबूत कर सकता है कि जैसे ही यह पाया जाता है कि अभियुक्त को उसी लेनदेन में चोटें आई थीं जिसमें शिकायतकर्ता पक्ष पर हमला किया गया था, निजी बचाव की दलील प्रथम दृष्टया स्थापित हो जाएगी और यह साबित करने के लिए अभियोजन पक्ष पर बोझ स्थानांतरित हो जाएगा कि वे चोटें अभियुक्त को शिकायतकर्ता पक्ष के आत्मरक्षा में लगी थीं?

25. अब, भा0द0सं0 की धारा 149 की मदद से आरोपी के निहितार्थ पर विचार करते हुए, प्रावधान पर विचार करने की आवश्यकता है। संहिता की धारा 149 सामान्य उद्देश्य से संबंधित है। इस प्रावधान को आकर्षित करने के लिए पांच या उससे अधिक व्यक्तियों की सभा का प्रमाण होना चाहिए, जिसमें सामान्य उद्देश्य गैरकानूनी हो जाता है। रचनात्मक या प्रतिनिधिक दायित्व की अवधारणा को इस प्रावधान में गैरकानूनी सभा के एक सदस्य द्वारा किए गए अपराध को सामान्य उद्देश्य वाले अन्य सदस्यों के लिए बनाकर लाया जाता है। यह सामान्य वस्तु का बंटवारा है जो एक द्वारा किए गए अपराध को दूसरे सदस्यों की ओर आकर्षित करता है। इसलिए, एक सभा में केवल उपस्थिति एक अपराध नहीं होगी, यह तब बन जाता है जब सभा गैरकानूनी होती है यह एक अपराध करने का सामान्य उद्देश्य है जिसके परिणामस्वरूप उक्त अपराध किया जाता है। इसलिए, हालांकि यह एक द्वारा किया जाता है, एक अपराध करने के उद्देश्य में समानता के कारण इसे दूसरों पर भी लागू करके एक डीमिंग फिक्शन बनाया जाता है। इस प्रकार, यह अभियोजन पक्ष के लिए है कि वह एक अपेक्षित संख्या के साथ विधानसभा के अस्तित्व, सभी के लिए सामान्य उद्देश्य, वस्तु के गैरकानूनी होने और ऐसे एक सदस्य द्वारा किए गए अपराध जैसे कारकों को साबित करे। भा0द0सं0 की धारा 149 के तहत आरोपित अभियुक्तों के प्रकरण से निपटने के दौरान न्यायालयों को अधिक सतर्क और सतर्क रहना होगा, क्योंकि इसमें एक काल्पनिक कल्पना शामिल है। इसलिए, यह साबित करने के लिए अभियोजन पक्ष पर उच्च स्तर की जिम्मेदारी डालने की आवश्यकता है कि अपराध का आरोप लगाया गया व्यक्ति भा0द0सं0 की धारा 149 के तहत दूसरों द्वारा किए गए अपराध के लिए दंडित होने के लिए उत्तरदायी है।

उपरोक्त पहलू को नियंत्रित करने वाले सिद्धांत को रंजीत सिंह बनाम पंजाब राज्य, (2013) 15

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



एससीसी 752:32, बालादीन बनाम उत्तर प्रदेश राज्य [एआईआर 1956 एससी 181: 1956 सीआरआई एलजे 345] में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा नोट किया गया है। जो उन शुरुआती प्रकरण में से एक था जिसमें सर्वोच्च न्यायालय ने भा0द0सं0 की धारा 149 से निपटा था। यह अभिनिर्धारित किया गया कि एक सभा में केवल उपस्थिति ही किसी व्यक्ति को गैरकानूनी सभा का सदस्य नहीं बनाती है, जब तक कि यह नहीं दिखाया जाता है कि उसने कुछ ऐसा किया था या उसे छोड़ा था जो दिखाता है कि वह गैरकानूनी सभा का सदस्य था या जब तक कि प्रकरण भा0द0सं0 की धारा 142 के तहत नहीं आता है।

26. **बालादीन प्रकरण [एआईआर 1956 एससी 181: 1956 क्रिली 345]** में की गई टिप्पणियों पर **मसाल्टी बनाम उत्तर प्रदेश राज्य [एआईआर 1965 एससी 202: (1965) 1 सीआरआई एलजे 226]** जहां इस न्यायालय ने समझाया कि ऐसे प्रकरण जिनमें व्यक्ति जो केवल निष्क्रिय गवाह हैं और जिज्ञासा से सभा में शामिल हुए थे, सभा के सामान्य उद्देश्य को साझा किए बिना, एक अलग स्तर पर खड़े थे; अन्यथा यह साबित करना आवश्यक नहीं था कि उस व्यक्ति ने कुछ अवैध कार्य किया था या विधानसभा के सामान्य उद्देश्य के अनुसरण में कुछ चूक का दोषी था, इससे पहले कि उसे धारा 149 भा0द0सं0 की मदद से विधानसभा के किसी अन्य सदस्य द्वारा किए गए कार्य के परिणामों के साथ बांधा जा सके। इस संबंध में निम्नलिखित मार्ग उपयुक्त है: (मसाल्टी प्रकरण [एआईआर 1965 एससी 202: (1965) 1 सीआरआई एलजे 226], एआईआर पी. 211, पैरा 17)

"17.... ऐसे प्रकरण में यह निर्धारित करने के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या सभा में पांच या अधिक व्यक्ति शामिल थे और क्या उक्त व्यक्तियों ने धारा 141 द्वारा निर्दिष्ट सामान्य उद्देश्यों में से एक या अधिक पर विचार किया था। इस प्रश्न का निर्धारण करते समय, यह विचार करना प्रासंगिक हो जाता है कि क्या सभा में कुछ ऐसे व्यक्ति शामिल थे जो केवल निष्क्रिय गवाह थे और सभा के सामान्य उद्देश्य पर विचार करने में शामिल हुए थे। यह उस संदर्भ में है कि इस न्यायालय द्वारा बालादीन [एआईआर 1956 एससी 181: 1956 सीआरआई एलजे 345] में की गई टिप्पणियों का महत्व है, अन्यथा, कानून में, यह कहना सही नहीं होगा कि किसी व्यक्ति को गैरकानूनी सभा का सदस्य माना जाता है, यह दिखाया जाना चाहिए कि उसने कुछ अवैध प्रत्यक्ष कार्य किया था या विधानसभा के सामान्य उद्देश्य के अनुसरण में कुछ अवैध चूक का दोषी था। वास्तव में,



धारा 149 यह स्पष्ट करती है कि यदि कोई अपराध उस सभा के सामान्य उद्देश्य के अभियोजन में किसी गैरकानूनी सभा के किसी सदस्य द्वारा किया जाता है, या जैसे कि उस सभा के सदस्यों को पता था कि उस उद्देश्य के अभियोजन में प्रतिबद्ध होने की संभावना है, तो प्रत्येक व्यक्ति, जो उस अपराध को करने के समय, एक ही सभा का सदस्य है, उस अपराध का दोषी है; और यह इस सिद्धांत को सशक्त रूप से सामने लाता है कि धारा 149 द्वारा निर्धारित सजा एक अर्थ में प्रतिनिधिक है और हमेशा इस आधार पर आगे नहीं बढ़ती है कि अपराध वास्तव में गैरकानूनी सभा के प्रत्येक सदस्य द्वारा किया गया है। "

27. **बाजवा बनाम उत्तर प्रदेश राज्य ((1973) 1 एससीसी 714]** में फिर से सर्वोच्च न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि गुटों से ग्रस्त समाज में हमेशा निर्दोष को भी दोषियों के साथ फंसाने की प्रवृत्ति होती है, दोषियों के साथ निर्दोष की निंदा करने के जोखिम के खिलाफ एकमात्र सुरक्षा स्वीकार्य साक्ष्य पर जोर देने में निहित है जो कुछ हद तक आरोपी को फंसाता है और न्यायालय की अंतरात्मा को संतुष्ट करता है।

28. गुटों से भरे समुदाय में दोषियों के साथ-साथ निर्दोषों को भी फंसाने की प्रवृत्ति होती है, खासकर जब किसी अपराध में बड़ी संख्या में हमलावर शामिल होते हैं, यह सामान्य ज्ञान का विषय है। ऐसे प्रकरण में साक्ष्य पक्षपातपूर्ण होने के लिए बाध्य हैं, लेकिन जबकि अदालतें इस तरह के सबूतों को हाथ से खारिज करके एक आसान रास्ता नहीं अपना सकती हैं, इसके बजाय उन्हें ऐसे सबूतों को सावधानीपूर्वक बयानों तक पहुंचने और न्याय के किसी भी गर्भपात से बचने के लिए सबूतों की अधिक बारीकी से जांच करने के लिए हाथ से बाहर होना चाहिए।

29. हम आगे पाते हैं कि एफआईआर और गवाहों के बयान में, मृतक को एकमात्र घातक आग्नेयास्त्र की चोट पहुंचाने की स्पष्ट भूमिका अपीलकर्ता, विनय कुमार दुबे और पीडब्ल्यू -3 के भाई दीपक दुबे को सौंपी गई थी, जिससे साबित हुआ कि मृतक को उसके बाएं सीने पर अकेले फायर आर्म की चोट लगी थी और वही उसके जीवन के लिए घातक साबित हुई। पी.डब्ल्यू.-5 के अनुसार सतीश पाल सिंह को मामूली चोटें आईं। अपराध का मकसद मृतक धीरेंद्र और दीपक दुबे के बीच दुश्मनी थी, जिनकी लंबे समय से दुश्मनी थी और 23.12.1981 को लगभग 04:30 बजे उनके बीच गर्म बातचीत हुई और दीपक ने धीरेंद्र और उसके साथियों को भविष्य में उन्हें देखने की धमकी दी। यह आरोप लगाया गया है कि अपीलकर्ता, विनय कुमार दुबे को उसके हाथ में



हॉकी के साथ गिरफ्तार किया गया था, जिस पर डीडब्ल्यू-2 ने विवाद किया था, लेकिन हम पाते हैं कि हॉकी के कारण मृतक धीरेंद्र को कोई घातक चोट नहीं आई थी। उनकी छाती के बाईं ओर एक अकेले फायर आर्म में चोट लगने के कारण उनकी मृत्यु हो गई, जिसके लिए स्पष्ट रूप से दीपक दुबे को जिम्मेदार ठहराया गया था। सतीश पाल सिंह और रवींद्र पाल सिंह को लगी चोटें प्रकृति में साधारण थीं और किसी भी आरोपी के खिलाफ उपरोक्त चोटों का कोई विशेष आरोप नहीं लगाया गया था। अभियोजन पक्ष ने यह भी नहीं बताया कि अपीलकर्ता सुरेश को डीडब्ल्यू-1 द्वारा साबित की गई 9 चोटें कैसे लगीं।

30. विचारण न्यायालय के फैसले से ऐसा प्रतीत होता है कि हालांकि विचारण न्यायालय ने फैसले में उल्लेख किया है कि अभियुक्त के बयान द0प्र0सं0 की धारा 313 के तहत दर्ज किए गए थे, लेकिन विचारण न्यायालय ने अपने फैसले में उनके बचाव पर बिल्कुल भी विचार नहीं किया है।

31. विचारण न्यायालय द्वारा द0प्र0सं0 की धारा 313 में दर्ज अभियुक्त-अपीलकर्ता के बयान पर विचार न करना एक गंभीर चूक है।

32. **रतन सिंह बनाम हिमाचल प्रदेश राज्य, एआईआर 1997 एससी 768** के प्रकरण में सर्वोच्च न्यायालय ने माना है कि द0प्र0सं0 की धारा 313 की जांच केवल औपचारिकता नहीं है। आरोपी द्वारा उससे पूछताछ करने के लिए दिए गए उत्तर अभियुक्त को उसके खिलाफ दोषी परिस्थितियों को समझाने का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से हैं। इससे न्यायालय को मुकदमे के दौरान न्यायालय के समक्ष पेश किए गए पूरे सबूतों की सराहना करने में मदद मिलती है। यहां तक कि मौत की सजा के एक प्रकरण में भी, **अजय सिंह बनाम महाराष्ट्र राज्य 2007(58) एससी 1061 (एससी)** के प्रकरण में सर्वोच्च न्यायालय के फैसले पर भरोसा करते हुए **आदिल बनाम उत्तर प्रदेश राज्य, 2008 (62) एससी 151 (एएलडी)** के प्रकरण में विचारण न्यायालय द्वारा धारा 313 द0प्र0सं0 के तहत अभियुक्त के बयान पर विचार न करने के कारण इस न्यायालय द्वारा अभियुक्तों को बरी कर दिया गया था।

33. प्रकरण के तथ्यों और परिस्थितियों के समग्र विचार को देखते हुए, इस न्यायालय ने पाया कि अभियोजन पक्ष अपीलकर्ताओं के खिलाफ उचित संदेह से परे अपने प्रकरण को साबित करने में विफल रहा और इसलिए अपीलकर्ता संदेह का लाभ बढ़ाने और सभी आरोपों से बरी होने के हकदार हैं।

34. विचारण न्यायालय के निर्णय और आदेश को एतद्वारा रद्द कर दिया जाता है।

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



35. अपीलकर्ता जमानत पर हैं। उनके जमानत बंधपत्र रद्द कर दिए जाते हैं और जमानतदारों को उन्मोचित किया जाता है। उन्हें आत्मसमर्पण करने की जरूरत नहीं है।

36. दोनों आपराधिक अपीलों को स्वीकृत किया जाता है।

37. अवर न्यायालय के अभिलेख को विचारण न्यायालय के निर्णय की प्रति के साथ वापस किया जाए।

38. विद्वान न्यायमित्र, सुश्री प्रियांशी गुप्ता को बिलिंग की तारीख से तीन सप्ताह के भीतर उनकी पेशेवर फीस के रूप में 10,000/- रुपये की राशि का भुगतान किया जाएगा।

17 फ़रवरी, 2026

रोहित

(न्यायमूर्ति जय कृष्ण उपाध्याय) (न्यायमूर्ति सिद्धार्थ)